

सूफी प्रेमकाल्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ (भाग-02)

1. काल्य में प्रबंधकल्पना :- इस काल्य परंपरा में लौकिक प्रेम के बलाने अलौकिक प्रेम को दिखाया गया है। इन कवियों की कल्पना का मुख्य उद्देश्य लौकिक प्रेम का निरूपण न करके प्रेमसत्त्व का महत्व निर्धारित करना है। कथा के प्रारंभिक अवस्था में नायक की जन्म कथा भुवावस्था में परिचय, नायिका के प्रति नायक का गृहत्याग आदि का वर्णन है उसके बाद नायक के उन करिनाम्यों का अंकन है, जो उसे नायिका के खोज में उतानी पड़ी है। तृतीय अंश में नायिका के मिलन, पाणिग्रहण एवं स्वदेश प्रत्यावर्तन का वर्णन है। प्रबंधकाल्य के इतिहात्मकता एवं रसालम्ब दोनों का समिश्रण सूफीकाल्य में मिलता है।

2. काल्य में भावव्यंजना :- सूफी काल्यों की मूल संवेदना प्रेममूलक है। इसमें शृंगार का प्राधान्य है। भावनाओं एवं अनुभूतियों का व्यापक चित्रण अनेक रूपों में किया गया है जिससे प्रेम के विरह का वास्तविक संपादन हो सका है। इसमें संगोष्ठा एवं वियोग का चित्रण करते हुए आह्वयमिश्रता की ओर भी संकेत दिया गया है।

3. चरित्र चित्रण :- सूफी प्रेममार्गी काल्य में पात्रों का चरित्रचर रूपों में दिखाया गया है - (1) आदर्श रूप में (2) ज्ञाने स्वभाव के रूप में (3) व्यापक स्वभाव के रूप में (4) सामान्य स्वभाव के रूप में। इसके साथ ही पात्रों की ऐतिहासिक एवं कारुणिक रूप से चित्रित किया गया है।

4. भारतीय संस्कृति एवं लोकप्रभाव :- इस प्रकार के प्रेम काल्यों में हिन्दुओं के राजघराने की संस्कृति की ज्यादातर दिखाया गया है। हिन्दू धर्म के सिद्धांतों का रहन-सहन, आचार-विचार, भारतीय ज्योतिष, रासामय शास्त्र आधुनिक ज्ञान आदि का वर्णन है। इससे इतिरिक्त काल्यों में लोकजीवन प्रथा

अंधविश्वास, मैत्र-तंत्र, जादू-टोना, विभिन्न लोकोत्सव, पर्व त्योहार लीर्य वृत्त आदि का भी बड़े ही कौशल के साथ डॉकन किया गया है।

5. शैलान की कल्पना :- सूफी काव्य में शैलान की कल्पना भारतीय मायावाद (द्वैतवाद में) के रूप में की गयी है। शैलान प्रेमसाधना में किछन डालकर पंचाण्डल करने वाला है इससे मुक्ति पाने के लिए गुप्त की शरण में जाना पड़ता है।

6. समन्वय की पहचान :- इस काल में संतों के स्वदेश-मंडन रूपी झौड़ोलन को शमित करके समन्वय करने का प्रयास किया गया है। आचार्य शुक्ल ने इन कवियों के बारे में कहा है - इन्होंने दुखलगान छोड़ हिन्दुओं की कल्पितों हिन्दुओं की बोली में सहृदयता से कहकर उनके जीवन की मर्मस्पर्शी नो अवस्थाओं के साथ अपने उदार हृदय का पूर्ण सामंजस्य दिखा दिया है।

7. नारी चित्रण :- सूफी प्रेमकाव्यों में नारी को प्रमुख स्थान दिया गया है। उसे परमात्मा का स्वरूप स्वीकार दिया गया है। नारी नूर का ध्यान है इसके बिना संसार शून्य एवं अंधेरे में है।

8. रस :- सूफी प्रेमकाव्यों में सुगार की प्रधानता है जिसमें संयोग एवं वियोग दोनों का मिलक्षण करीब है। नायक गुणाश्रयण, प्रत्यक्ष दर्शन, चित्दर्शन या स्वप्नदर्शन से नायिका से प्रेम करने लगता है और इससे पाने के लिए कठिन कष्ट झेलता है।

9. प्रतीक विधान :- काल में कवियों ने लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम को दिखाया है। अलौकिक आह्वानिकता को अलौकिकता के लिए इन कवियों ने सांकेतिक प्रतीकों का प्रयोग किया है।

10. विविध प्रभाव :- सूफी मत के ऊपर मुख्यतः न्याय प्रभाव दृष्टिगोचर है - भारतीय अद्वैतवाद तथा विशिष्टाद्वैतवाद इस्लाम की मुद्गा विद्या, नव झडलादनी मत तथा वैचारिक स्वातंत्र्य। इन कवियों ने अहिंसावाद को क्रियात्मक रूप में ग्रहण किया है।

11. रहस्यात्मकता :- इस काल में रहस्यवाद का सुंदर एवं कोमल प्रयोग हुआ है। सूफी कवियों ने जगत की सत्य मानकर रहस्यवाद की वही सुंदर और भावलाभ अभिव्यक्ति की है।

12. काल्य-प्रकार :- सूफी प्रेमकाल्यों की रचना प्रबंधात्मकता की परिपक्वी पर हुई है। इनमें शैली का नामकरण आलोचकों ने गहन की दिया है। इनके कथा के आरंभ में ईश्वर कहना, मुहम्मद साहब से हुर्रि, शाहे वक्त की प्रशंसा, आत्मपरिचय आदि वर्णित है। इसके अनिश्चित मुक्त शैली में दोहा, चौपाई, झुलना, कुण्डलिया आदि दोहों का प्रयोग किया गया है।

13. भाषा :- सूफी कवियों की भाषा अवधी है। कहीं-कहीं ब्रज भाषा एवं गोजपुरी भाषा में भी प्रयोग मिलता है। अवधी भाषा के मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

14. छंद एवं अलंकार :- सूफी प्रेमकाल्यों में दोहा एवं चौपाई का योग उपलब्ध किया गया है जो स्वतंत्र रूप में कड़क है। लक्ष चौपाइयों के बाद एक दोहे का विधान है। इन्होंने विविध अलंकार जैसे उपमा-रूपक उत्प्रेक्षा आदि का सम्यक् प्रयोग किया है। अन्योन्य स्तंभ समाश्लेष अलंकार में मुख्यतः समाश्लेष का सुंदर प्रयोग हुआ है।